शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

ग्रामदान से होगा अन्त्योदय

नरेंद्र दुबे

आज जिस समाज में हम लोग रह रहे हैं, हमने जैसी अर्थरचना, समाज व्यवस्था, राज्य रचना, शिक्षा इत्यादि चला रखी है, उसके कारण शोषण का एक महाचक्र बन गया है और सारा समाज जाने-अनजाने, चाहे-अनचाहे इस चक्र में पिस रहा है। अंतिम जन इसका सबसे अधिक शिकार हो रहे हैं, लेकिन यह भी सही है कि यह शोषण चक्र उनके सहयोग से ही चल रहा है। जैसे ही वे इससे असहयोग कर देंगे यह एकदम टूट कर बिखर जाएगा।

आज की सरकार के पास पुलिस, फौज, नौकरशाही, लोकसम्मति आदि के साथ ही मुद्रा की शक्ति भी है। आम जनता में कुछ लोगों के हाथ में भूमि की व्यक्तिगत मालकियत है, जिसके कारण उनके हाथ में उत्पादन करने या न करने की शक्ति है, कारखानों की भी व्यक्तिगत मालयिकत के कारण कुछ लोगों के हाथ में उत्पादन करने, उत्पादन बढ़ाने, घटाने या न करने की शक्ति है। इसके साथ ही सरकार चाहे जब मुद्रा की पूर्ति बढ़ा सकती है और कम कर सकती है और लोग मुद्रा को चाहे जितनी मात्रा में और चाहे जितने समय तक संचित करके रख सकते हैं। वर्तमान मुद्रा प्रणाली और उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व के कारण ही शोषण का महाचक्र चल रहा है।

आज गांव की भूमि के बड़े भाग पर गांव के बहुत थोड़े से लोगों का दखल है ये कुछ लोग ही साख वाले हैं और इन्हें सरकार और बैंकों से कर्ज मिलता है। पैदावार का बड़ा हिस्सा बाजार में जाता है, बाजार के भाव किसान के हाथ में नहीं हैं। जब ज्यादा पैदा होता है तो पूर्ति बढ़ जाने से भाव गिर जाते हैं। जब कम पैदावार होती है तो किसी भी कारण से, सरकार लेव्ही लगाती है और निश्चित भाव पर जो सामान्यतः कम होते हैं, एकाधिकार खरीदी करने लगती है। किसानों को और सभी ग्रामवासियों को अपनी सारी जरूरत का माल जैसे वस्त्र, कृषि के यंत्र, खाद, नया बीज इत्यादि उसे बाजार से ही खरीदना होते हैं, जिनके मूल्यों पर किसान का कोई नियंत्रण नहीं होता है। इसके साथ ही शिक्षा, न्याय, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि के लिए भी उसे उत्पादन से होने वाली आय का एक बड़ा हिस्सा व्यय करना पड़ता है। सरकारी टैक्स का और घाटे की अर्थव्यवस्था से बढ़ने वाले बोझ को भी शहरी-ग्रामीण अधिसंख्य आबादी को वहन करना पड़ता है। इस सबका ग्रामीणों पर इतना दबाव पड़ता है कि ग्रामों के श्रमिक शहरों की ओर भागने लगते हैं, बुद्धिजीवी शहरों की ओर पलायन करते हैं और गांव के कुछ बड़े किसान खासकर नव-समृद्ध किसान पूंजी लेकर शहर में चले जाते हैं। गांव में रह जाती है और रह गयी है अंतिम जनों की फौज।

जैसा शोषण चक्र बन गया है, उसके कायम रहते हुए सरकार या कल्याणकारी संस्थाओं की कोई भी योजना अंतिम जनों का उद्धार नहीं कर सकती। यदि सिंचाई के साधन बढ़ाए जाते हैं तो

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उसका उपयोग उत्पादन वृद्धि में इस प्रकार हो जाता है जिसमें समृद्ध समूह और समृद्ध बन जाता है और अंतिम जन जहां के तहां रह जाते हैं। यदि सरकार कृषि उत्पादनों को ऊंची कीमत देती है तो उसका फायदा समृद्ध समूह को मिल जाता है। यही हाल खाद, बीज, यंत्र आदि का भी होता है। यहां तक कि सड़क, स्कूल, शिक्षा सुविधा, न्याय, कानून, सभी का लाभ ऊपर के वर्ग को मिल जाता है। सत्ता का विकेंद्रीकरण करके पंचायत व जनपदों को अधिकार देते हैं, तो नव समृद्ध समूह उन पर भी कब्जा कर लेता है और इसका अपने हित में ही उपयोग करने लगता है, सहकारी समितियां बनाते हैं तो उसको भी यही समूह अपने कब्जे में कर लेता है। तात्पर्य यह कि विकास की अच्छी से अच्छी और कुशल योजना भी समृद्धों की समृद्धि बढ़ाने में और सामान्यजनों को अधिक साधन सुविधा दिलाने वाली बन जाती है। अंतिम जनों को को उससे कोई लाभ नहीं मिल पाता है। दुन्याभर के विकासशील देशों में यही कहानी दुहराई जा रही हैं इसी कारण सरकारों द्वारा बनाये गये सुधान के सारे कायदे निरर्थक हो गए हैं।

अंत्योदय का अर्थतंत्र

'अंतजनों' के उद्धार के लिए एक सर्वथा अभिनव अर्थतंत्र निर्माण करने की आवश्यकता है। यह ऐसा अर्थतंत्र हो जो सहज, स्वाभाविक हो और जिससे अन्त्योदय की ऐसी प्रक्रिया शुरू हो जाए जो अंततः समता और न्याय पर आधारित आर्थिक समृद्धि का बायस बन जाए।

अन्त्योदय के लिए गांव की मूलभूत इकाई को बुनियादी मानकर एक तंत्र विकसित करना होगा। प्रत्येक गांव की ग्रामसभा बने, जिसमें सब निवासी सदस्य हों। गांव में जमीन का स्वामित्व ग्रामसभा का बनाना होगा, जिसमें ग्रामसभा की साख बन जाए और गांव का व्यक्ति शोषण के प्रहार से बच सके। गांव के विकास के लिए, रोजगार देने के लिए, उपभोक्ता माल के निर्माण के लिए, ग्रामोद्योग खड़े किए जाएं, बाहर के उद्योगों का माल स्थानीय ग्रामो द्योगों को तोड़ न दे और गांव की निर्मित वस्तुएं मिट्टी मोल बाहर न बेची जा सके, इसके लिए ग्रामसभा को गांव के आयात-निर्यात को नियंत्रित करना पड़ेगा। गांव के भीतर एक-दूसरे का शोषण न हो सके, इसलिए या तो मजदूरी अनाज या वस्तुओं में दी जाए अथवा अपने गांव के लिए श्रम मुद्रा का इस्तेमाल विनिमय के लिए करें। गांव के बाहर का माल खरीदने के लिए ही सरकारी मुद्रा का इस्तेमाल हो। श्रमिकों की मजदूरी ग्रामसभा तय करे जो श्रमिक और श्रमिकों का उपयोग करने वाले दोनों की दृष्टि से न्याय युक्त हो। खासकर ग्रामों से बाहर श्रमिकों को भेजने के पहले ही उनकी सुरक्षा, चिकित्सा मजदूरी आदि का पूर्व निर्धारण होना चाहिए। अन्त्योदय की दृष्टि से चार-पांच बातों का विशेष महत्व है :

1 ग्रामसभा : आपस में सलाह-मशविरा करने, योजना बनाने आदि के लिए यह लोगों का अपना बुनियादी संगठन हो। अनेक ग्राम सभाएं आपस में मिलकर प्रखण्ड सभा और जिला सभा बनाएं। इसी प्रकार का संगठन ऊपर तक हो। ऊपर से ऊपर और नीचे से नीचे की इकाई के बीच और आपस-आपस में भी संबंध हो। यही संगठन 'अन्त्योदय' का मुख्य औजार बने।

2 ग्राम-स्वामित्व : भूमि और उत्पादन के अन्य साधनों पर स्वामित्व ग्रामसभा का रहे। इन पर बाहर का दखल न हो, यदि हो तो कम से कम अभिक्रम स्वतंत्रता कायम रहे। इस दृष्टि से कब्जा, काश्त, विरासत का हक किसान का ही रहे।

3 न्यूनतम सबको उपलब्ध हो : जीवन के लिए आवश्यक न्यूनतम साधन जैसे निवास के लिए भूमि और मकान, रोजगार, धंधा, पोषणयुक्त भोजन, वस्त्र, चिकित्सा, शिक्षा, मनोरंजन आदि के साधन और काम के औजार सबको उपलब्ध होना आवश्यक है। इसके लिए ही संयोजन किया जाए। सबको न्यूनतम की ग्यारंटी होने के साथ ही अधिक उत्पादन क्षमता का मुआवजा अभिक्रम वाले को प्राप्त हो।

4 स्वतंत्र शिक्षण : सबको उचित, उपयोगी और स्वतंत्र शिक्षण प्राप्त हो, इसका संयोजन । यह स्वाभाविक है कि ऐसा शिक्षण काम के माध्यम से होगा, उत्पादकता के साथ जुड़ा होगा और विज्ञान तथा कला के समन्वय को साधने वाला होगा। ऐसे शिक्षण के द्वारा अन्त्योदय सहज स्वीकार्य प्रक्रिया के रूप में मान्य हो जाएगा।

5 सहकारी लोकतंत्र : ग्रामसभा, प्रखण्ड सभा, जिला सभा, प्रादेशिक विधान सभाएं या संसद में लोकतंत्र विशेषतः सहकारी-लोकतंत्र की प्रक्रिया चलेगी। निर्णयों में आमराय तक, सहमति तक पहुंचना इस प्रक्रिया का ध्येय रहे। सभी लोकतांत्रिक संस्थाओं में आमराय की लोकनीति का अधिष्ठान आवश्यक है।

अन्त्योदय का अर्थतंत्र विकसित करने के लिए यह सब बहुत आवश्यक है। लेकिन मुख्य प्रश्न यह है कि यह हो कैसे ? आज के शोषण के महाचक्र को तोड़कर अन्त्योदय का सर्वहितकारी अर्थतंत्र कैसे बने ? इसके लिए बहुत कुशल व्यूहरचना की आवश्यकता है। ग्रामदान से इसका प्रारंभ हो सकता है।

(ग्रामदान-तत्व-दर्शन)